कसौटी

85

गंगारत्न पाण्डेय

85

कसौटी

दहेज और सामाजिक शोषण
पर आधारित लघु उपन्यास

गंगारत्न पाण्डेय

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002
टेलेफोन : 3319282

ग्रन्थांक : 151
©भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ : **मूल्य : 3.00**
पहला संस्करण : 1985

मुद्रक :
शान प्रिंटर्स,
शाहदरा
दिल्ली-110032

अपनी ओर से—

सामने एक जंगल है और हांफता हुआ सन्नाटा। बीच में जंगल के पार जाने के लिए एक ऊबड़खाबड़ रास्ता है। सड़क तो क्या कहेंगे, हां—पतली-सी पगडंडीनुमा एक डगर है। खैर, कुछ भी हो, है तो रास्ता ही—जंगल के पार जाने का !.....

हमारे देश—यानी दुनिया के सबसे बड़े आजाद जनतन्त्र देश—में 'अनपढ़ता' या शालीन भाषा में कह सकते हैं : 'निरक्षरता' एक घना भयावह जंगल ही तो है, जिसे पार करने के लिए आजादी के बाद हम बीहड़ डगर पर लगातार चलते रहे हैं और आगे भी तमाम उलझनों और आपाधापी के बावजूद चलते रहने की हमारी यह इच्छा और कोशिश लगातार जारी है। रही बात इस लंबे सफर में चलते रहने के दौरान सफलता की—तो आंकड़े बोलते हैं कि इस समय हम कहां और किस पड़ाव पर हैं। मानना होगा, और मान लेना भी चाहिए, कि हमारे इस लम्बे सफर की, कुछ अड़चनों और भटकावों के बावजूद एक सही दिशा बराबर बरकरार है। उदाहरण जरूरी ही हो तो, फिलहाल बेझिझक अपने इसी पड़ाव का हवाला देना ही काफी होगा कि आपके हाथों में आयी यह पुस्तक नवसाक्षरों के लिए प्रकाशित है।

जी हां, इस शृंखला में प्रकाशित आठ नयी पुस्तकें पिछले दिनों भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा 'ऐस्पेबे' के सहयोग से सूरजकुंड में आयोजित लेखक-कार्यशाला में लिखी गई थीं। इस तरह की कार्य-शालाएं भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा पहले भी कारगर रूप से

सम्पन्न हुई हैं, लेकिन विषय की विविधता और सर्जनात्मक लेखन की सवरसता के कारण यह सूरजकुंड कार्यशाला सहज ही अनूठी हो गयी। इस कार्यशाला में राजधानी दिल्ली तथा दूसरे शहरों से आए सजग लेखकों ने पूरी हार्दिकता से हिस्सा लिया और राष्ट्रीय एकता, परिवार कल्याण, जनसंख्या शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों, महिला शिक्षा, पर्यावरण, ग्रामीण विकास—जैसे विषयों पर खुले मन से लिखा। हमें विश्वास है, उनकी लिखी पुस्तकें नव-साक्षर साहित्य के पाठकों, और प्रशिक्षकों को भी, पूरा सन्तोष अवश्य देंगी।

अंत में, 'ऐस्पेबे' और कार्यशाला में सक्रिय रूप से भागीदार लेखकों के प्रति मैं आभारी हूं।···साथ ही, इस कार्यशाला को सफल बनाने के लिए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा के सहयोगियों—डॉ० एस०सी०दत्ता, श्री जे० एल० सचदेव और श्री पद्मधर त्रिपाठी को अपना धन्यवाद देता हूं। आमीन !·····

विनम्र

—जे० सी० सक्सेना
महासचिव (अवैतनिक)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002

25 दिसम्बर, 1985

कसौटी

कसौटी

सुधीर बाबू की बेटी मोहिनी की शादी का शुभ दिन नजदीक आ रहा था। सुधीर बाबू जवार के जाने-माने रईस थे। इसलिए जवार भर के मनचले लोगों को आशा थी कि मोहिनी की शादी के मौके पर खूब आनन्द आएगा। नाच-गाना, नौटंकी, आतिशबाजी—जाने क्या-क्या होने की उम्मीद थी। पर एक-एक दिन करते-करते शादी का दिन भी आ पहुंचा, और कहीं किसी चीज की तैयारी ही न दिखाई दी। लोगों में तरह-तरह की चर्चाएं चल पड़ीं। हर किसी की टोपी उछालने में माहिर रौनकलाल ने कहा, "यारो ! यह जो सुधीर बाबू है न, पक्का मूजी है। यह दमड़ी नहीं खर्च करने वाला। नाहक तुम लोग मौज-बहार की आशा लगाए थे इससे। एक बात बताऊं ? मुझे पता लगा है कि इसने लड़के के बाप को भी मूड़ लिया है। सुनते हैं, दस हजार

रुपए ऐंठ लिए हैं।"

"जो है सो, कोई ताज्जुब नहीं भैया। आदमी पूरा घिसा मक्खीचूस है,"—साहेब लाल बोले, "अरे ऐसे ही थोड़े पैसे वाला बना है। जो है सो, मुझे तो लगता है यह दहेज में बेटी को भी पांच टके नहीं देगा।"

"लेकिन मैंने तो कुछ और ही सुना है," —दीनानाथ ने कहा, "कोई कह रहा था कि लड़के के बाप सुधीर बाबू से जब बीस हजार गिना लिए हैं, तब तो शादी मंजूर की है।"

"गलत सुना है,"—रौनकलाल ने फैसला देते हुए कहा, "मूजी सुधीर से कोई बीस टके भी गिना सकता है ? किसी ने कह दिया, तुमने मान लिया।"

"तो तुमने ही कैसे मान लिया कि सुधीर बाबू ने दस हजार लड़के वालों से ऐंठ लिए हैं ?"—दीनानाथ कुछ जोश के साथ बोले, "तुमने देखा है ऐंठते हुए ?"

"देखा तो नहीं है, मगर आदमी की पहचान तो है", —रौनकलाल ने भी आवाज ऊंची करते हुए कहा, "सुधीर-जेसा चालू आदमी किसी से भी रुपए ऐंठ सकता है, दे नहीं सकता ! समझे ?"

इस चर्चा के चलते चौकड़ी के चौथे सदस्य बिहारी भी आ गए। आते ही बोले, "अरे कुछ सुना तुम लोगों ने ? यह सुधीर बाबू अपनी बेटी का ब्याह एक गैर जात के लड़के के साथ कर रहा है ! सुनते हैं लड़का···"

"जरूर गैर जात का होगा,"—रौनकलाल ने पुष्टि की, "अरे जाति वाले अच्छे लड़के इस मूजी की लड़की से थोड़े ही शादी करेंगे। वह तो हजारों गिनाएंगे, हजारों ! और

सुधीर बाबू तो कौड़ी देने से रहा।"

साहेब लाल ने अपनी सूझ की सुनाई, "जो है सो, गैर-जात का है तो जरूर कोई नीच जात का होगा। इसीलिए सुधीर बाबू ने कोई खास इन्तजाम नहीं किया। जो है सो, चुपचाप फेरे डालकर छुट्टी पाने की सोची है। बड़ा चलता हुआ है। और रौनक भाई! जो है सो, हो सकता है तुमने जो बात सुनी है, वह सही ही हो। बिहारी की बात से लगता है, तुम्हें बिल्कुल सही खबर मिली है।"

"अब इन्हीं दीनानाथ से पूछो"—रौनक लाल ने अपनी बात को अटल मानते हुए कहा, "पूछो कि नीच कौम के लड़के के साथ बेटी का ब्याह सुधीर बाबू क्यों कर रहा है?—रकम ऐंठने के लिए? या रकम गिन देने के लिए?"

"लेकिन तुमने यह कैसे मान लिया कि लड़का नीच कौम का है?—दीनानाथ ने आपत्ति की, "मैंने तो सुना है कि लड़का किसी बैंक में ऊंचे ओहदे का अफसर है।"

"अरे तो क्या नीच जाति का लड़का बैंक में अफसर नहीं हो सकता ?"—बिहारी ने तीखे स्वर में सवाल किया, फिर रौनक की ओर घूमकर बोले, "और तुमने क्या खबर पाई है, रौनक ?"

"सुना है, सुधीर बाबू ने लड़के वालों को मूंड़ लिया है, दस हजार ऐंठ लिए हैं उनसे।"—रौनक लाल ने दीनानाथ की ओर देखते हुए कहा, "लड़का नीच जाति का है न ?"

"कौन लड़का नीच जाति का है, रौनक लाल जी ?"—उधर आ निकले सतीश ने अनजान बनते हुए पूछा। सवाल किया गया था रौनक से, उत्तर दिया बिहारी ने, "आपको तो सब पता ही होगा, सतीश बाबू। हमसे क्या पूछते हैं ? अब तो यह बात फैल ही चुकी है कि अपने सुधीर बाबू अपनी बेटी का ब्याह एक नीच जाति के लड़के के साथ कर रहे हैं। बड़े आदमी हैं, कुछ भी करें। पर यह बड़ा गलत काम हो रहा है। सुनते हैं दस हजार रुपये लेकर लड़की नीचे कौम के लड़के को सौंप रहे हैं। ऐसा अधर्म का काम !!

राम—राम !!···" बिहारा न अधर्म की दुर्गन्ध से नाक सिकोड़ ली।

"इतना जरूर सुना है कि लड़का किसी बैंक में नौकर है, अफसर है। राम जाने सच है कि झूठ।"—रौनकलाल ने खबर पूरी की।

"आप लोगों ने जो सुना है वह गलत थोड़े ही होगा।"—सतीश ने मुस्कराते हुए कहा, "आपको गलत खबर देने की हिम्मत कौन करेगा ? हां, लड़के का चाल-चलन कैसा है ? कुछ इसकी भी खबर मिली ?"

"अरे इसमें खबर मिलने न मिलने की क्या बात है, सतीश बाबू ? नीच जाति का लड़का है तो चाल-चलन भी नीच ही होगा।"—बिहारी ने कहा।

दीनानाथ ने आपत्ति की, "जरूरी नहीं है···।"

"कैसे जरूरी नहीं है ? बेर की डाली में बेर नहीं लगेंगे तो क्या अंगूर लगेंगे ? हर बात में टांग अड़ाने की तुम्हारी पुरानी आदत है।"—बिहारी गरम हो उठे।

"लेकिन अंगूरों की कुछ बेलों में तो बेर लगे दिखाई दे रहे हैं, बिहारी भाई !"—सतीश ने सहज भाव से कहा, "और सचमुच, बड़े खट्टे बेर हैं।"

"क्या मतलब, जो है सो ?"—साहेब लाल बोले।

"मतलब यह कि ऊंची जाति ऊंचे खानदान वाले कुछ लड़कों का चाल-चलन तो आप देख ही रहे हो,"—सतीश ने चबूतरे पर बैठते हुए कहा, "अब देखो न, किसी का नाम लेना तो ठीक नहीं, पर आप ही बताओ बिहारी भाई, कौन-सा नीच काम है जो इन लोगों से बचा है ?—और इस गिरोह में नीच जाति का तो एक भी लड़का नहीं है।"

"यह तो आप ठीक कह रहे हो, सतीश भाई। इस गिरोह ने तो भले आदमियों का जीना मुश्किल कर दिया है।"—बिहारी ने स्वीकार किया। वह खुद ही गिरोह के शिकार बन चुके थे।

"तो अंगूरों की बेलों में ये खट्टे बेर लगे हैं न, साहेब लाल जी ? —सतीश ने कहा, "तो यह भी हो सकता है कि बेरों की डालों में मीठे-मीठे अंगूर भी लगें। अब देखो न, कमल भी तो कीचड़ से निकलता है।"

"यह तो ठीक है, मगर सतीश भाई ! लड़का भले ही अच्छा हो, पर है तो नीच जाति का ही। इसका भी तो विचार करना चाहिए।"—बिहारी ने कहा।

"एक बात बताओ बिहारी भाई"—सतीश बोला, "आपको अपनी बेटी का ब्याह करना है न ? ऊंची जाति वाले इस गिरोह के किसी लड़के के साथ क्यों नहीं कर देते ?"

"कैसी बात करते हो, सतीश भाई ? मेरी मति मारी गई है क्या जो इन बदमाशों में किसी के साथ अपनी बेटी का ब्याह कर दूं ? राम-राम !!"

"लेकिन क्यों नहीं करोगे ? हैं तो सब ऊंची जाति के, ऊंचे खानदान के ? फिर एतराज किस बात पर ?"—सतीश ने कुरेदा।

"बेटी की शादी मुझे उनकी जाति या खानदान से थोड़े ही करनी है। जिसके साथ जिन्दगी निभानी होगी बेटी को, उसे देखूंगा या जाति-खानदान को ?"

"तो मतलब यही हुआ न कि ऊंची जाति या नीची जाति का होना खास बात नहीं है। असल बात है लड़के का अच्छा या बुरा होना। है न ?

"सो तो है ही।"—बिहारी और रौनक एक साथ बोल उठे।

"तो फिर, सुधीर बाबू ने अगर लड़का अच्छा देखकर अपनी बेटी के लिए पसन्द कर लिया, तो क्या बेजा किया?"

साहेब लाल अपना फैसला सुनाते हुए बोले, "जो है सो, तुम कुछ भी कहो, दुनिया-जहान में तो यही कहा जाएगा कि सुधीर बाबू ने अपनी बेटी का ब्याह, जो है सो नीच कौम के लड़के के साथ कर दिया।"

"आप गलत सोचते हो,"—सतीश ने कहा, "दुनिया-जहान को इसका पता लगने की फुरसत ही नहीं है। यह तो आप-जैसे कुछ समाज-सेवी लोग ही हैं जो ऐसी बातों की खोज-खबर रखते हैं। फिर पूरी और पक्की खबर आप लोगों को भी नहीं मिल पाती। अब देखो न, इसी मामले में अभी तक आप लोगों को भी पूरा सुराग लगा ही नहीं कि लड़का किस जाति का है और क्या करता है। क्यों बिहारी भाई? फिर यह भी तो सोचिए कि जात-पांत का, कुल-खानदान का उन दिनों सचमुच कोई महत्त्व था जब लोगों के चाल-चलन पर उनका कड़ा अंकुश रहता था। वह जमाना बहुत पीछे छूट गया। अब देखो न, जाति-कुटुम्ब तो दूर, मां-बाप का भी अंकुश अपनी औलाद पर नहीं के बराबर रह गया है। इसलिए भले-ऊंचे घरों के लड़के भी—आप तो देख ही रहे हो—कैसे हो रहे हैं।"

दीनानाथ प्रसन्न मन बोले, "बिलकुल सही कह रहे हो, सतीश भैया! सब कुछ तो आंखों के सामने हो रहा है।" सुन कर सतीश मुस्कराते हुए बोला, "सच्ची बात तो यह है कि ऊंचे कुल, ऊंची जाति में पैदा होने से ही कोई ऊंचा नहीं हो

जाता। आदमी हमेशा अपने आचरण से, अपने चाल-चलन से ऊंचा या नीचा होता है। इस बात को तुलसीदास जी कितने साफ शब्दों में कह गए हैं :

बाढ़े खल बहु चोर जुआरा, जे लंपट पर धन पर दारा।
मानहिं मातु-पिता नहिं देवा, साधुन्ह सब करवावहिं सेवा।
जिनके यह आचरन भवानी, ते जानेहु निसिचर सम प्रानी।

—यानी दुष्ट लोग, चोर, जुआरी, दूसरोंकी सम्पत्ति, बहू-बेटियों पर आंख गड़ाने वाले, माता-पिता और देवताओं का तिरस्कार करने वाले, साधु-सज्जन लोगों पर अत्याचार करने वाले चाहे जिस जाति, कुल-परिवार में पैदा हुए हों, तुलसी बाबा उन्हें मनुष्य भी नहीं मानते, राक्षस मानते हैं—राक्षस ! जिनका वध करने के लिए भगवान अवतार लेते हैं। अब अपने चारों ओर आंखें उठाकर देखो, किस-किस जाति, कुल, परिवार में तुम्हें ये राक्षस दिखाई देते हैं।"

"धन्य हो सतीश भैया।"—दीनानाथ भाव-विभोर हो उठे, "तुलसी बाबा की यह बानी सुनाकर तुमने हमारी आंखें

खोल दीं। जाति और कुल के बड़प्पन की आड़ में चल रहा गोरखधन्धा समझ में आ गया। अब आगे से यह जात-पांत का ढकोसला दूर करके, आदमी की परख उसके चाल-चलन से ही करेंगे।"

"वही तो सच्ची कसौटी है, दीनानाथ जी ! आदमी के ही भेस में राक्षस भी घूमते हैं और देवता भी। आदमी का आचरण, उसके काम, उसका चाल-चलन ही तो वह कसौटी है जिस पर उसे परखा जा सकता है। इस कसौटी पर जो खरा उतरे वह खरा सोना, चाहे किसी भी जाति, कुल या खानदान का हो।·· क्यों बिहारी भाई, ठीक है न ? अब शाम को तो लड़का भी देखने को मिलेगा ही।"—कहकर हंसते हुए सतीश चल दिए।

धीरे-धीरे शाम भी हो गई। बारात आ गई, ब्याह की रस्में भी पूरी हो गई। सब-कुछ बिलकुल सीधे-सादे ढंग से। कोई धमा-चौकड़ी नहीं। आतिशबाजी देखने के लिए आकुल लोग निराश हो गए। बैण्ड-बाजे की धमाधम, नाच के नाम पर बेढंगी उछल-कूद, कमर मटकाना, पैसों की लूट के लिए मनचले लोग दुःखी हो गए। न नौटंकी, न नाच-गाना। कहीं कुछ नहीं। सब तरफ टीका-टिप्पणी होने लगी। साहेबलाल ने अपने खास अन्दाज में राय जाहिर की, "लड़के वाले भी निरे मक्खीचूस हैं। जो है सो, समधियों की जोड़ी अच्छी मिली है। किसी ने भली कही थी :

जस मुकुंद तस लिल्ली घोड़ी,
विधना भली मिलाई जोड़ी।

दोनों एक-दूसरे के कान काटने वाले कंजूस हैं। अरे और तो और, जो है सो, बैण्ड-बाजा तक नहीं किया लड़के के

बाप ने !"

"किया ही क्या है ? दस टके की आतिशबाजी तक नहीं थी ! सुनते थे—लड़के वाले भी पैसे वाले हैं। बारात आएगी तो धूम मचेगी। पर कहीं कुछ नहीं। खोदा पहाड़, निकली चुहिया।"—सात कोने का मुंह बनाते हुए तिलकराज ने कहा।

"तो तुम्हारे सुधीर बाबू ने ही क्या किया है ?"—मुंह बनाते हुए धीरज प्रसाद बोले, "बिजली की कुछ देखने लायक सजावट तक नहीं कराई। बस चार शहनाई वाले बुला लिए जो पीं-पीं कर रहे हैं। बड़े पैसे वाले बनते हैं।"

"और बारात भी कोई बारात है ? मुश्किल से चालीस-पचास आदमी होंगे। इससे दूने लोग तो मेरे बेटे के मुंडन में आए थे। और मैंने दिल खोलकर जश्न मनाया था।"—कहते हुए तिलकराज का चेहरा गर्व से चमक उठा। फिर कुछ बुझते हुए-से बोले, "हालांकि इसके लिए मुझे कर्ज लेना पड़ा था।"

सुधीर बाबू ने शादी के भोर बारात की बिदाई से पहले सबको चाय पीने के लिए आमंत्रित किया था। स्कूल के बड़े कमरे में इन्तजाम किया गया था। वहीं एक कोने में बैठा यह गुट अपनी चर्चा में खोया था। बाराती सबसे आगे बैठे थे। उनके पीछे अन्य लोग। जिले के विद्यालय निरीक्षक की प्रतीक्षा की जा रही थी।

तिलकराज की बात सुनकर प्रशंसा-भरे स्वर में साहेब लाल बोले, "इसके लिए भी दिल चाहिए। जो है सो, दिल-वाले ही जशन मना सकते हैं। कर्ज की क्या बात है ? मौके पर बड़े-बड़ों को, जो है सो, कर्ज लेना पड़ जाता है।"

"किसको कर्ज लेना पड़ गया, साहेबलाल जी ?"—बगल की कुरसी पर बैठते हुए सतीश ने पूछा। दीनानाथ भी उसके साथ ही आए थे।

"यही तिलकराज कह रहे थे, जो है सो, कि अपने बेटे के मुंडन के समय दिल खोलकर जशन मनाया इन्होंने, भले ही इन्हें कर्ज लेना पड़ा। पर मौके पर, जो है सो, कंजूसी नहीं की, पैसे वालों की तरह।"—साहेबलाल ने अपने ढंग से दोनों समधियों पर चोट की।

"आप ठीक कहते हो, साहेबलाल जी ! पैसा पास होते हुए भी मौके पर मुनासिब खर्च न करना, बेशक कंजूसी है। मगर कर्ज लेकर जश्न मनाना तो समझदारी नहीं है, बल्कि बेहद नासमझी है। अब देखो न,"—तिलकराज के कंधे पर हाथ रखते हुए सतीश ने कहा, "आपने बेटे के मुंडन का जश्न कर्ज लेकर मनाया। अभी तक कर्ज अदा नहीं हुआ होगा, ब्याज भी देना ही पड़ता होगा।"

"सो तो है ही। सूद से छुटकारा कहां ?"—दीनानाथ बोले।

"सोचने-समझने की बात है, साहेबलाल जी। एक दिन जश्न मनाकर महीनों, वर्षों तक कष्ट उठाना कहां की समझदारी है ? अब देखो न, जिस बच्चे के मुंडन के लिए कर्ज लिया गया, उसे क्या लाभ हुआ ? लोगों ने जश्न मनाया और चलते बने। फल भोगना पड़ रहा है उस बच्चे को। कर्ज की अदायगी के लिए तिलकराज को घर के खर्च में कटौती करनी ही पड़ती होगी। इसका मतलब है बच्चे के लालन-पालन में भी, उसके खान-पान, कपड़े, पढ़ाई-लिखाई की सुविधा—हर बात में कटौती। है न तिलकराज जी ?"

—सतीश ने सहानुभूति के साथ पूछा।

"हां, बात तो आप ठीक ही कह रहे हैं। कटौती तो हर बात में करनी ही पड़ती है।"—तिलकराज ने स्वीकार किया।

"यही तो होता है। जोश में हम होश गंवा बैठते हैं। अब देखो न, चार घड़ी के दिखावे के लिए लोग हजारों रुपए नाच-नमाशे, आतिशबाजी वगैरह में फूंक देते हैं, फिर बरसों पछताते हैं। मैं तो कहता हूं, पास चाहे जितना पैसा हो, इस तरह की फिजूलखर्ची नहीं करनी चाहिए। अब देखो न,

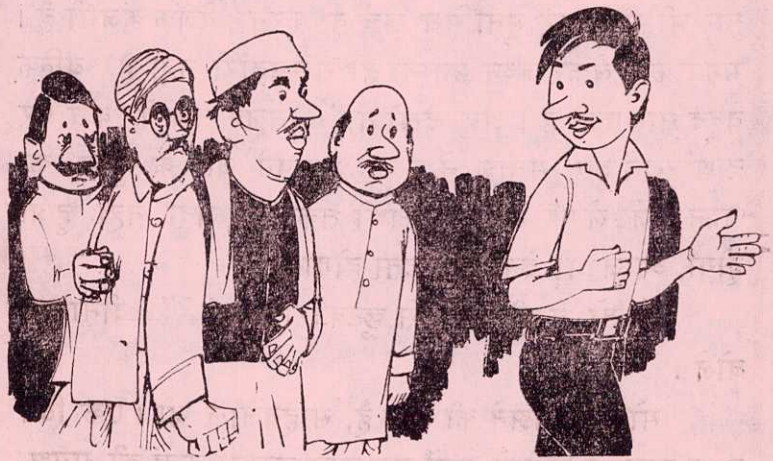

सुधीर बाबू ने कितनी समझदारी बरती है ! किसी तरह की फिजूलखर्ची नहीं की, न खुद की और न लड़के वालों को करने दी।"

सतीश की बात सुनकर साहेबलाल और तिलकराज एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। उन्हें अपनी गलती का अहसास हो रहा था। सतीश कहता गया, "पास पैसा हो तो उसका सदुपयोग करना चाहिए, अच्छे कामों में, सबकी

भलाई के कामों में लगाना चाहिए।"

इस बीच जिला विद्यालय निरीक्षक के साथ सुधीर बाबू, उनके समधी महेश बाबू और दामाद राकेश तथा बेटी मोहिनी सभी मंच पर आ गए। लोगों ने खड़े होकर स्वागत किया। बिहारी भी इसी बीच आकर तिलकराज और साहेबलाल के बीच खड़े हो गए। इन्स्पेक्टर के बैठते ही सब लोग बैठ गए।

तब सुधीर बाबू खड़े हुए। सबको सम्बोधित कर बोले, "मेरे लिए बड़ी खुशी की बात है कि मेरी बेटी मोहिनी का ब्याह महेश बाबू के चिरंजीव राकेशजी से सम्पन्न हो गया। और भी ज्यादा खुशी इस बात की है कि विवाह के सम्बन्ध में महेश बाबू ने मेरे विचारों और आदर्शों का भरपूर आदर किया। दहेज की बात उठाते हुए बोले, 'दहेज लेना अपना बेटा बेचने के बराबर है, और मैं अपना बेटा किसी कीमत पर भी बेचना पसन्द नहीं करता।' मैंने अर्ज की थी कि बारात बहुत बड़ी न लाएं, तो इन्होंने जवाब दिया, 'मैं लड़का ब्याहने आऊंगा, आपके घर-गांव पर धावा बोलने के लिए फौज

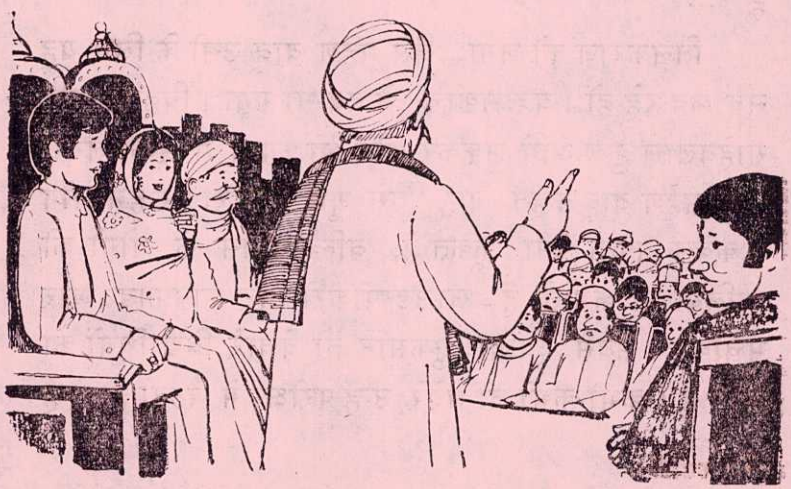

थोड़े ही लानी है।' और आप सबने देखा कितनी सुन्दर, सीमित, शिष्ट बारात वह लाए।"...

"शादी के मौके पर होने वाले नाच-तमाशे की मनाही करते हुए महेश बाबू ने जोर देकर कहा था कि चार घड़ी के तमाशे के लिए न वह पैसा बरबाद करेंगे, न मुझे करने देंगे। केवल मंगल-वादन के लिए शहनाई का प्रबन्ध करने की छूट इन्होंने मुझे दी। मैं समझता हूं, इनकी बात आप इन्हीं के मुंह से सुनें तो ज्यादा अच्छा होगा।" यह कहकर सुधीर बाबू बैठ गए। तब इन्स्पेक्टर साहब के संकेत पर महेश बाबू खड़े हुए। लोग उनकी बातें सुनने के लिए उत्सुक हो उठे।

महेश बाबू ने कहना शुरू किया, "सज्जनो! हम लोग शादी-ब्याह के मौकों पर फिजूलखर्ची के आदी हो गए हैं। इसमें अपनी शान समझने लगे हैं। शादी-ब्याह ही नहीं, बच्चों के मुंडन-छेदन-जैसे छोटे-छोटे संस्कारों के अवसर पर भी चन्द घंटों के लिए जश्न मनाने में हजारों रुपए फूंक देते हैं। आश्चर्य तो यह है कि कुछ लोग कर्ज लेकर फिजूलखर्ची करते हैं। यह घर-फूंक तमाशा देखना नहीं है तो और क्या है?..."

तिलकराज को लगा—जैसे महेश बाबू उसी के लिए यह सब कह रहे हों। वह संकोच से दब-सा गया। बिहारी और साहेबलाल कुछ आगे झुककर और भी ध्यान से सुनने लगे।

महेश बाबू कहते गए, "ऐसे शुभ अवसरों पर हम लोग न केवल अपना पैसा फूंकते हैं, बल्कि पड़ोस के लोगों की गालियां भी कमाते हैं—लाउडस्पीकरों पर कानफोड़ शोर मचाकर। सबसे ज्यादा नुकसान तो बेचारे विद्यार्थियों का होता है। कभी-कभी तो सवेरे उन्हें परीक्षा में बैठना होता है

और रात-भर लाउडस्पीकरों की दहाड़ के मारे न पढ़ पाते हैं, न सो पाते हैं। मन-ही-मन कोसते हैं, गालियां देते हैं, सरापते हैं वर-वधू को, लड़की-लड़के वालों को। जब सबकी शुभकामनाएं, शुभाशीष मिलने चाहिए, उस अवसर पर गालियां और अभिशाप कमाते हैं हम लोग पैसे फूंककर। इससे बढ़कर मूर्खता और क्या होगी ?"

लोगों ने सहमति-सूचक सिर हिलाए। महेश बाबू ने आगे कहा, "हम लोग समझते हैं कि हमारे पास जो पैसा है वह हमारा-ही-हमारा है, और हमें पूरा हक है कि हम जैसे चाहें वैसे फूंकें-तापें। लेकिन मैं ऐसा नहीं मानता। मेरी तो समझ में हममें से हर एक के पास जो कुछ भी है, वह हमारा होते हुए भी, इस देश का है—हमारे राष्ट्र का है। इसलिए हमें अपने पैसे को फिजूलखर्ची नहीं करनी चाहिए, बल्कि उसका उपयोग इस ढंग से करना चाहिए कि हमें भी सुख-सन्तोष मिले, और देश का—समाज का भी भला हो।"

धीरज प्रसाद से न रहा गया। बोले, "बिहारी भाई! कैसी ऊंची हांक रहा है ? ऐसा लगता है जैसे देश और समाज की भलाई के लिए सब-कुछ लुटा देगा। मूंजी कहीं का !"—सुनकर सतीश ने धीरज की ओर ऐसी नजर से देखा कि उसे चुप हो जाना पड़ा।

महेश बाबू कहते गए, "मैं जानता हूं कि उपदेश देना बहुत सरल होता है। लोग दूसरों को उपदेश देते हैं, पर खुद वैसा आचरण नहीं करते। ऐसा करना धोखा देना है, खुद अपने-आपको, समाज को और भगवान को। लेकिन मैं दूसरों से जो कुछ करने को कहता हूं, वही खुद भी करता हूं। आप कह सकते हैं कि फिजूलखर्ची न करने का बहाना

बनाकर मैंने कंजूसी की है, पैसे बचाए हैं, और सुधीर बाबू ने भी यही किया है। बात ठीक है। हमने पैसे बचाए हैं। पर पैसे बचाए हैं उनका अच्छा उपयोग करने के लिए। हमने हिसाब लगाकर देखा कि अगर हम दोनों पूरे जोश के साथ वैसी ही फिजूलखर्ची करें—बैण्ड, पंडाल, आतिशबाजी, नौटंकी, नाच-गान, सजावट आदि में जैसा लोग चाहते थे, तो करीब बीस-बीस हजार रुपए हम दोनों के स्वाहा हो जाते। इन्हें बचाकर इनका उपयोग हमने एक ऐसे ढंग से करने का निश्चय किया जिससे अच्छा ढंग हमें समझ में ही नहीं आ रहा था। पर इसके पहले कि मैं उसे बयान करूं, मैं चाहता हूं कि सतीश बाबू, जो वहां पीछे छिपे बैठे हैं, यहां आने की कृपा करें।"

"आइए सतीश बाबू ! आइए ! वहां छिपकर क्यों बैठे हैं ?"—इन्स्पेक्टर ने कहा। बड़े संकोच के साथ सतीश उठकर मंच पर गया। इन्स्पेक्टर ने उसे अपने पास बिठाया। तब महेश बाबू ने फिर कहना शुरू किया, "मैं कह रहा था कि हमें इन चालीस हजार रुपयों का उपयोग करने का सबसे अच्छा ढंग सूझ नहीं रहा था। वह सूझ हमें इन्हीं सतीश बाबू ने दी।···

महेश की बात सुनकर सबकी निगाहें सतीश पर जा टिकीं। बिहारी, धीरज, तिलकराज सब एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

महेश बाबू ने सतीश की ओर देखते हुए कहा, "सतीश बाबू ने हमें सुझाया कि इन रुपयों से होनहार गरीब विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था की जानी चाहिए। इनका सुझाव हमें बहुत पसन्द आया। इस प्रकार सुधीर बाबू

ने और मैंने बीस-बीस हजार रुपए इस स्कूल के नाम हमेशा के लिए बैंक में जमा कर दिए हैं। बीस हजार रुपए के ब्याज से सुधीर बाबू की बेटी और मेरी पुत्रवधू मोहिनी के नाम से 'मोहिनी छात्रवृत्ति' ऐसी गरीब होनहार लड़कियों को दी जाएगी जो इस स्कूल से सबसे अधिक अंक पाकर पास होगी और आगे पढ़ना चाहेगी। शेष बीस हजार रुपयों के ब्याज से मेरे बेटे और सुधीर बाबू के दामाद राकेश के नाम से राकेश 'छात्रवृत्ति' ऐसे गरीब होनहार लड़कों को दी जाएगी जो सबसे अधिक अंक पाकर इस स्कूल से निकलेंगे और आगे पढ़ना चाहेंगे। जमा किए गए इन रुपयों को कोई निकाल नहीं सकेगा। बैंक से मिले कागजात मैं इन्स्पेक्टर साहब को सौंप रहा हूं।"

—इतना कहकर महेश बाबू ने कोट की जेब से निकालकर सारे कागजात इन्स्पेक्टर के सामने रख दिए और बैठ गए। तालियों की आवाज से कमरा गूंज उठा।

तब इन्स्पेक्टर साहब सबको सम्बोधित करते हुए बोले, "आज का दिन बड़ा शुभ दिन है। मोहिनी बेटी और राकेश का विवाह सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर एक ऐसे मंगलमय काम की नींव डाली है सुधीर बाबू और महेश बाबू ने जो हम सबके लिए आदर्श बन जाएगा। कितना अच्छा हो अगर हम सब लोग इनकी तरह शादी-ब्याह जैसे अवसरों पर पैसा बरबाद करने के बजाय ऐसे ही नेक कामों में लगाएं? सुधीर बाबू और महेश बाबू ने अपनी बेटी मोहिनी और अपने बेटे राकेश का नाम अमर कर दिया। पीढ़ी-दर-पीढ़ी इनके नाम से छात्रवृत्ति पाकर अपना जीवन संवारने वाले इनका नाम लेंगे। जाने कितने घर-परिवार इनके इस

काम से सुधरेंगे, आगे बढ़ेंगे, उन्नति करेंगे। इसी तरह तो समाज की, देश की प्रगति होती है, उन्नति होती है।"

कुछ रुककर उन्होंने सतीश की ओर देखा। फिर बोले, "इस मौके पर मैं सतीश बाबू का नाम लिए बिना नहीं रह सकता। महेश बाबू ने अभी आपको बताया कि यह सुन्दर काम उन्होंने सतीश बाबू के सुझाने पर ही किया है। दर-असल इस शुभ कार्य के मूल में सतीश बाबू ही हैं। फिर भी आपने देखा कि किस तरह वह वहां सबसे पीछे छिपकर बैठे थे, और बुलाने पर ही बड़े संकोच के साथ यहां सबके सामने आए। सच्चे निःस्वार्थ समाजसेवी का यही लक्षण है। वह चुपचाप लोगों को सही बात बताने, सही राह सुझाने का काम किया करते हैं। आगे बढ़कर वाहवाही लूटने का लाभ उठाना सच्चे देश-प्रेमी को कभी नहीं सुहाता। हमें सतीश बाबू-जैसे लोगों की ही जरूरत है। यह आपका सौभाग्य है कि वह आपके बीच में हैं। मुझे विश्वास है कि उनकी प्रेरणा से यहां ऐसे ही शुभ कार्य होते रहेंगे। भगवान ऐसे ही रूपों में अपना काम करता-कराता है।"

□□□

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
'शफीक मेमोरियल'
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110002